व

यादगार जशन ताजपोशी

महाराजाधिराज ऐडवर्ड हफ्तम ब मुक़ाम

दरबार आली देहली

जिसको

श्रीयुत विद्यासागर सकलगुणआगर मुंशी युधिष्ठिर बहादुर

ज़िमींदार क़स्बे जाजमऊ तहसील संडीला ज़िले हरदोई

हाल तहसीलदार कोसगी रियासत निज़ाम

ने वास्ते फ़ायदे

ज़िमींदारान व काश्तकारान के

बनाया

आगरा

मुहल्ले कटरे नन्दराम कायस्थ हितकारी

नाम शिक्षा यंत्रालय में मुद्रित हो कर

प्रकाशित हुई

सन् १९०३ ई०

ईश्वरप्रार्थना

बारम्बार नमस्कार है उस सच्चिदानन्द परमेश्वर को जिस ने हम लोगों को ऐसे समय जन्म दिया जब भारतवर्ष में प्रजा को नाना प्रकार के सुख व चैन देने का बृटिश गवर्नमेन्ट ने बोझा उठा लिया है हे परमात्मा तू अपनी दयालुता से क्षत्री बालकों को बुद्धि दे कि वह अपनी पृथ्वी को खोकर पराधीन न हों बल्कि उसको बचाकर इस प्रकार चलें कि वह और उनकी सन्तान सुखचैन से रहे.

युधिष्ठिर बहादुर जिलेदार
जाजमऊ तहसील [illegible]
हरदोई तहसीलदार कोसगी
रियासत निज़ाम

क्षत्रीजीवनचरित्र

विदित हो कि क्षत्री बालक के जन्म से लेकर यज्ञोपवीत तक जब कुल रसमें हो चुकीं और वह बालक शूद्रता से द्विज धर्म्म को प्राप्त हो चुके तो उन को किसी विद्वान पण्डित से वेद विद्या पढ़ाना चाहिये यद्यपि बहुधा क्षत्री (अर्थात् ज़मींदार) अपने बालकों को मदरसे में उर्दू पढ़ाते हैं जिस का पढ़ाना हर हाल में व्यर्थ ही है क्योंकि अब उर्दू विद्या न धर्म्म विद्या है न राज विद्या.

हम लोगों की धर्म्म विद्या संस्कृत और राज्य विद्या अंग्रेज़ी है अब तो हमारे धर्म्म रक्षक सर एन्टी मेकडोनल साहब बीरेश लेफ़्टिनेन्ट गवर्नर ने इस सूबे में नागरी भाषा को सरकारी दफ्तरों में लिखने की आज्ञा दी है यद्यपि गांव के कुल कागज़ात तो पहलेही से तैयार होते थे परन्तु अब सम्पूर्ण कानून भी नागरी में छप गये हैं. और बंगबासी कलकत्ता, वेंकटेश्वर समाचार बम्बई, अवध समाचार लखनौ आदि बहुत से समाचार पत्र (अखबार) भी निकलते हैं पस नागरी भाषा जानने से कुल धर्म्म व राज्य धर्म्म सम्बंधी दोनों काम निकल सक्ते हैं.

बीस पच्चीस वर्ष की अवस्था तक ब्रह्मचर्य्य रहकर ज्योतिष विद्या (जिस के पूर्ण ज्ञात होने से पानी बरसने का हाल मालूम होता है कि किस समय कितना पानी बरसेगा या कब सूखा पड़ेगा).

वैद्यक (जिस के पूर्ण ज्ञात होने से मनुष्यों और पशुओं की चिकित्सा अर्थात् बीमारी की दवा हो सक्ती है).

धर्म्मशास्त्र (जिस से राजनीति दंड अर्थात् अच्छे बुरे कर्म्मों का फल जाना जाता है). गणित विद्या अर्थात् हिसाब (जिस से रोज़ मर्रा के लेन देन और नफ़ा नुक़्सान जाना जाता है). माप विद्या अर्थात् मसाहत (जिस से गांवों व खेतों के नापने का हाल मालूम होता है जिससे सरहद्दी झगड़े आपसमें

समझ कर निपट सकते हैं) भूगोल अर्थात् जुगराफ़िया (जिससे देशों की पैदावार और उसकी आवश्यकता जानी जाती है) इतिहास अर्थात् तारीख़ (जिससे आपस के मेल अर्थात इत्तिफ़ाक़ के फ़ायदे और बिरुद्ध यानी निफ़ाक़ के नुक़्सान मालूम होते हैं) प्राकृति भूगोल अर्थात् साइन्स जिससे पृथ्वी की तहों का हाल अर्थात् किस ज़मीन में क्या पैदा हो सक्ता है और किस उपाय से पैदावार बढ़ सक्ती है यहां तक कि ऊसर तक की ज़मीन से भी पैदा कर लेने के उपाय महकमे ज़राअत कानपुर से निकले हैं, मालूम होते हैं) आदि विद्या प्राप्त करके धर्म्मवान कुल में बिवाह करे सन्ध्या गायत्री वेद पाठ नित्य किया करे अच्छा सत्संग करे (देखो रामचंद्र जी का इतिहास)

बिवाह के पश्चात् इन्द्री जीत रहे इसी के प्रतिकूल आचरण से रावण व बालि नाश हो गये. अपने भ्रातृगण से लक्ष्मण व भरत के सदृश मेल मिलाप रक्खे पराये धन धरती स्त्री के छीन लेने की इच्छा करके कौरव की नाईं नाश को प्राप्त न हो राजा हो अथवा छोटा ज़मींदार अपनी प्रजा को बालक के समान जानकर वाजिवी हक़ लेवे ऐसा उपाय करे कि प्रजा सुखी व धनाढ्य रहे जैसे पहले समय अयोध्यापुरी की थी और अब लंदन की है.

हे ! (राजपुत्र) राजपूत व अन्य ज़मींदारों क्षत्री धर्म्मानुसार चलो. जिस ज़मींदारी बचाने के लिये (जबकि कोई पुख़्ता क़ब्ज़े की न थी) तुम्हारे पिता अधर्म्मियों के सन्मुख अपना व अपने प्रिय भाइयों बालकों व कुटुम्ब का लोहू (ख़ून) बहते देखते सिर (सीस) कटाते थे - आज ऐसे न्यायकारी महाराजाधिराज के वशीभूत होकर द्रव्य के लालच झूठे नाम के कारण व्यर्थ ख़र्च करके अथवा काम वश्य होकर पृथ्वी माता (जिसके मालिक हो और जो तुम को बालक की नाईं पाल रही है) को बेंच अथवा गिरवी करके परमार्थ बिगाड़ रहे हो शास्त्रानुसार पृथ्वी का बेचना या जिसका हक़ न हो उसको दे देना बड़ा अधर्म्म है शोक तो यह है

कि आप में मे अनेक धर्म्म नहीं जानते सोचो तो सही कि तुम्हारे कुटुम्ब के लोग किस कदर खो चुके हैं

अपनी चालको अगर व्यर्थ खर्च न करो परिश्रम करना सीखो देखो श्री महाराजा रामचन्द्र जी ने सम्पूर्ण विद्या पढ़ी एक हज़ार कोश पैदल जाकर लङ्का को विजय किया महाराजा युधिष्ठिर ने १२ वर्ष बनवास किया तो उनके सामने आप क्या वस्तु हैं परिश्रमी बनकर पृथ्वी से प्रजा द्वारा कमवाओ और आप भी कमाओ कूप व तड़ाग खुदाओ गो रक्षा करो वृक्ष लगाओ प्रथम तो इन कार्य्यों का करना धर्म्म है द्वितीय तुम्हारी पृथ्वी को यदि पानी व पांस मिलेगी तो पैदावार की बहुता से तुम व प्रजा शीघ्र धनाढ्य हो जाओगे सूखा के आपत्ति काल से बचोगे घृत दूध खाने से तुम बलवान और सन्तान पुष्ट पैदा होगी आयु बढ़ेगी.

जिमींदारी के विभाग

जिमींदार लोग आपस में लड़कर (जिसका प्रारंभ एक ओर अधर्म्म और दूसरी ओर [illegible] न होने से होता है) अपनी भूमि को अदालत की भेट कर देते हैं अथवा [illegible] छोटे २ विभाग होजाते हैं जिससे अपनी मर्यादा को नाश कर देते हैं वाहो उनके पुरखाओं की ऐसी मर्यादा थी कि राजा कहलाते थे और अब वही राजपुत्र छोटे २ जनों की खुशामद करते फिरते हैं अगर विद्वान होते [illegible] (समझौता) आपही निकाल लेते तो पटवारियों की क्यों खुशामद करते. मालगुजारी वक़्त पर अदा करते, चपरासियों के नाज़ क्यों उठाते, भाई की खुशामद कर लेते तो पूरी जायदाद के हिस्से क्यों होजाते अगर हिस्सेभी होते तो एक मौज़े में आप दूसरे में भाई को रखते.

गांव की ज़रूरत

१ पानी, २ पांस, ३ पशु (मवेशी), ४ अच्छे आलात खेती के, ५ वृक्ष, ६ महाजन से बरताव, ७ लगान.

आबपाशी

दुरुस्ती ज़मीन की तो सब लोग कुछ न कुछ करही लेते हैं परन्तु पानी के

बन्दोबस्त से ग़ाफ़िल हैं.

१– यह इन्तज़ाम किया जावे कि जहांतक होसके तालाब गहरे होते जायं क्योंकि रेती अगर १फुट साल आती जावे तो १० वर्ष में १०फुट मिट्टी जमा हो जावेगी. अगर मकान बनाने या खेतों में पिंडोल डालने को मिट्टी निकाली जाया करें तो फ़ायदा रहेगा.

२– तालाब अगर गहरे भी हुए मगर पानी आने का रास्ता कम हुआ तो कसरत बारिश (बूड़ा) के साल में भरगये नहीं तो पूरा फ़ायदा न हुआ यह तो होही नहीं सक्ता कि एकही जगह हमेशा ज़ियादा पानी बरसा करे अगर ऐसे तालाबों में दूर २ से नेइल बना दिये जांय तो जो पानी व्यर्थ नदी नालों में बहि जाता है वह तालाबों में जमा हुआ करे इस तरीक़े से अगर साल में एक दो मर्तबे भी ज़ियादा पानी बरसे तो भी तालाब भर जांयगे.

३– अगर तालाब नये खोदे जावें तो पहले कूआ खोद कर यह देख लेना चाहिये कि नीचे की तह बालू पर न हो अगर बालू पर होगा तो पानी जल्दी सूख जायगा और सींचने के समय तक पानी न रहेगा.

४– कच्चे कुंए जहां होते हैं वहां उनको आसामी पक्के बना लेते हैं यह ज़मीदारों की बड़ी भूल है कि आसामी को अक्सर बनाने की आज्ञा नहीं देते अगर आसामी बनावे और धनाढ्य हो और इजाफ़ा न दे तो भी साल हाल का लगान हर समय पर अदा हुआ करेगा इसी अदाई बेखरखशा के वास्ते धनाढ्य को कम ब्याज पर क़र्ज़ देते हैं फिर अगर आसामी धनाढ्य रहेगी तो उम्दा तरद्दुद करेगी गांव सरसब्ज़ होगा आज नहीं तो कल ज़िमींदार को फ़ायदा होगा ऐसी आसामी के भागने और गांव उजड़ने का डर नहीं रहता.

५– अगर बालू कंकड देखना हो तो महक्मे ज़िराअत कानपुर से आला मंगाकर देख सक्ते हैं कि किस जगह कितना कंकड़ है और कितनी दूर तक इसमें आसामी को ५) और ज़िमींदार को १०) फ़ीस पड़ेगी. खास २ हालत में कमी भी हो सक्ती है जिन ज़िमींदारों के गांव में बिल्कुल पानी

निकलने की उम्मेद न हो वह भी हिम्मत न हारें नई नई तदबीरें निकल रही हैं.

६-- महकमे ज़िराअत कानपुर ने कई तरह के पम्प बनाये हैं जो बहुत पुष्ट और ५०) या ६०) में मिलते हैं उन से थोड़े खर्चे में ज़ियादा काम होता है.

७-- यह ख्याल सही नहीं है कि बन्दो बस्त में इस्लाह पर माल गुज़ारी बढ़ जावेगी क्योंकि गवर्नमेंट ज़िमींदारों के खर्चे इस्लाह का लिहाज़ करके माल गुज़ारी क़ायम करती है.

खादों का बयान

यों तो खादें बहुत तरह की होती हैं मगर इस जगह सिर्फ़ उन का ज़िक्र किया जाता है जो हर जगह आसानी से मिल सक्ती हैं.

१-- गोबर और पेशाब जानवरों का गेहूं और मकाई को मुफीद है.

२-- घोडों और गदहों की लीद भी खाद है.

३-- मनुष्यों का मैला तेज़ खाद आलू को मुफीद है.

४-- जानवरों की हड्डी अगर खाद में एक साल तक गड़ी रहे उसके बाद कूटकर ३ मन पक्की हड्डी लीद में मिलाकर १ बीघे पक्के को काफी है तरकारी को यह खाद मुफीद है.

५-- रेंडी की खली भी सब चीज़ को मुफीद है.

६-- एक सौ अस्सी मन राख में अगर ३ मन शोरा मिला दिया जावे तो उम्दा खाद एक ईकड़ को होगी.

७-- हरी जिन्स नील सन आदि दरख्तों की पत्तियां जोत कर मिला देने
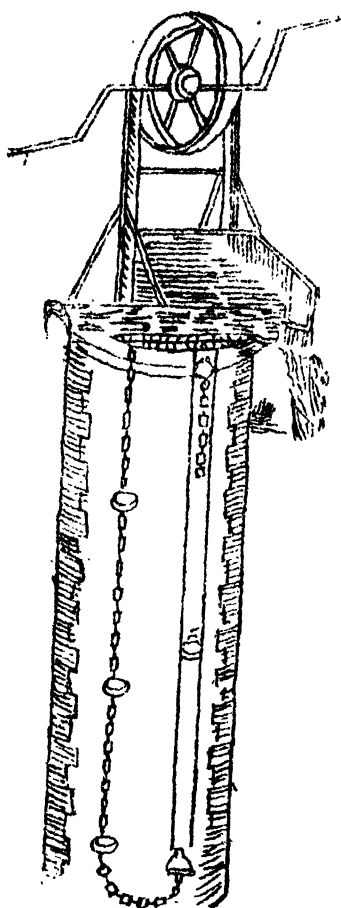
से खाद के बराबर मुफीद है.

८—तालाब का पिंडोल मुफीद खाद है.

९—लोनी मिट्टी पोस्ता को मुफ़ीद है.

१०—उन दरख़्तों पर जिन में कीड़े होगये हों राख छिड़कने से बहुत फ़ायदा होता है.

पेशाब जमा करने की तरकीब

जिस जगह जानवर बांधे जाते हों उन के नीचे राख या सूखी मिट्टी बिछा देना चाहिये प्रथम तो गंदिगी दूर रहेगी द्वितीय गोबर के साथ वह मिट्टी भी उठाकर ऐसी जगह जमा करना चाहिये जो नीची ज़मीन न हो कि बरसात का पानी उस में भरजावे न ऐसी ऊंची जगह हो कि जो धुलकर खोजड़ रहजावे बिहतर हो कि छोटी २ दीवार आस पास बनाकर उस पर ऐसा हलका छप्पर बतौर मंडवा (मंडप) के डालना चाहिये ताकि थोड़ा पानी उस में जाकर खाद को सड़ावे ज्यादा पानी जाने से नुक़सान है अथवा धूप या हवा लगने से नुक़सान है.

मवेशी

ज़िमींदारों को चाहिये कि वह ऐसी कोशिश करें कि उनके गांव में इतने जानवर रहें कि मज़रुआ ज़मीन को खाद अच्छी तरह मिल सके तजरुबे से जाना गया है कि एक जोड़ी बैल का गोबर अगर दिन रात साल भर तक जमा किया जावे, तो ३ पक्के बीघा को खाद काफ़ी होगी.

हमारे यहां दिन को मवेशी जंगल में रहती हैं जिस से दिन भर के गोबर से चरागाहों और जंगली पेड़ों को फ़ायदा हो सक्ता है इस हिसाब से सिर्फ़ दो बीघे मज़रुआ ज़मीन को साल भर में दो बैलों के गोबर व पेशाब की खाद से फ़ायदा होगा ग़र्ज़ कि एक बीघे के वास्ते एक बैल की ज़रूरत है इसलिये जानवरों के बढ़ाने पर ख़ास तवज्जुह लाज़िम है ताकि कसरत खाद से कुल मज़रुआ आराज़ी की पैदावार बढ़ जावे. जिससे आसामी धनाढ्य

होकर ज़मींदार का लगान वक़ पर दे देवे और इज़ाफ़ा भी होसके.

फ़र्ज़ करो एक मौज़े का रक़बा १०००) बीघे है.

गोयंड २००) बी. मझा ४००) बी. पालो ४००) बी. लगान मौजूदा गोयंड की ६) बीघा. मझा की दर ४) पालो की दर ३) कुल आमदनी ४०००) हुई.

अगर सब में खाद पहुंचे और कुल गोयंड होजाय तो कुल ज़मीन ६) बीघे को होकर ६०००) की हो जावे.

इस इन्तज़ाम से २०००) साल का इज़ाफ़ा बिला तकलीफ़ व जब्र के होता है अगर खाद का इन्तज़ाम न करके यह इज़ाफ़ा किया जाता तो आसामी तबाह और गांव वीरान होजाता अगर कोई जिमींदार नई आराज़ी लेकर २०००) का मुनाफ़ा बढ़ाना चाहे तो ४० या ५० हज़ार रुपये खर्च करने पर भी झगड़े बखेड़े होकर मुमकिन है.

एक हज़ार जानवरों में २५० बैल हल वाले होंगे १५० भैंस और ६०० गायं होंगी

अगर दाना चारा खली अच्छी तरह दीजाय तो बैल उम्दा और अच्छी तरह काम देंगे- गायें भैंसें दूध ज्यादा देंगी बच्चे मजबूत होंगे खाद क़वी होगी यह लिखना काफ़ी है कि खाद से पैदा वार इस क़दर बढ़ जावेगी कि सर्फ़ा खुराक उससे बदर्जहा कमी पर होगा महकमे ज़िराअत कान पुर में हमेशा तजरुबा किया गया है मिन जुमला सबके एक ज़िक्र किया जाता है सन् १९०२ ई० में ईख कई खेतों में बोई गई मिनजुम्ला उनके एक में गोबर की खाद दी गई उस की पैदावार फ़ी एकड़ ४२१॥) हुई और बग़ैर पांस वाले की सिर्फ़ १५।-) फ़ी एकड़ हुई इस से ४०६।≡) खाद से ज्यादा पैदा हुआ इस खेत में खर्च निकाल कर २९२॥-) फ़ी एकड़ नफ़ा हुआ और बिला खाद वाले में ४७-) नुक़सान रहा - इससे मवेशी के फ़ायदे ज़ाहिर हो सके हैं अलावा इस नफ़ा के दूध घी बछड़ों भैंसों से जो नफ़ा होगा उसकी तफ़सील यह है :—

१०० भैंसों में ५० भैंस सालाना दूध देंगी फ़ी भैंस २सेर जिस की क़ीमत सालाना २२५०) होगी ५० बच्चे नर और ५० मादा ५० सुर्दाआन होंगे उन की क़ीमत -

क़ीमत मादा फ़ीरास २५)　　　　क़ीमत नर फ़ीरास ८)

१२५०)　　　　४००)

१६५०)

यह रक़म ३ साल मे हुई

औसत सालाना ५५०)

गायें औसत से ३०० हर साल दूध . फ़ी गाय आध सेर के हिसाब से सालाना ३३७५) का हुआ.

२०० बैल २०० गायें फ़ी बैल १५) के हिसाब से ३०००) फ़ी गाय ५) कुल १०००) हुए कुल क़ीमत ३ साल में ४०००) रुपया

औसत १३३३।-)४ पाई सालाना मुनाफ़ा हुआ

आमदनी सालाना ७५०८।-)४ पाई

खर्च ख़ुराक मवेशियान के वास्ते भूसा व कर्बी जो खेतों में पैदा होगी काफ़ी है मालूम अगर बैलों के सिवाय और जानवरों का फ़ीरास २ गाड़ी भूसा रक्खा जावे तो ज़्यादा से ज़्यादा ३००) का फ़सल पर होगा खली [illegible] १५००) रु० का दिया जावे तो भी २००८।-)४ की बचत होगी अर्थात् २५०) रु० माहवार की बचत होगी

आलात [illegible]

काश्तकारी उद्यम सब से पहले ज़माने में भी श्रेष्ठ था इस समय [illegible] महाराजा चीन अपने हाथ से हल जोत कर रस्म अदा करते हैं यहां की तो यह मसल ही है,

उत्तम खेती मध्यम बान । निकृष्ट चाकरी भीख निदान

मनु जी ने अपने शास्त्र में मालिक आराज़ी के साथी और काश्तकार

को वैश्य कहा है वैश्य अर्थात् काश्तकार खेती करते पशु (जो जीव ज़िराअत के हैं) पालते थे अपनी पैदावार अच्छे दामों पर (जहां मांग होती थी) ले जाकर बेचते थे.

अब देखना चाहिये कि मज़रूआ ज़मीन सैकड़ों बरसों से जोती जा रही है और पांस पहुंचती नहीं है न उस का इन्तज़ाम इधर पैदावार कम होगई उधर ज़िमींदारों की हवस (लालच) ने इज़ाफ़ा लगान कर दिया जिससे सब लोग कंगाल होगये सख़्ती लगान के कारण काश्तकार कई २ फ़सलों के बोने पर मजबूर हुए अगर एक सूखा पड़गया तो ज़मीन को आराम मिल गई उस साल अर्थात् सूखे में काश्तकार तबाह होगया दूसरे साल जिसने उस ज़मीन को काश्त किया फ़ायदा उठाया थोड़े दिनों के पीछे उसका हाल भी ख़राब होने लगा.

प्राचीन समय में अव्वल तो आबादी कम थी दूसरे ज़ालिम बादशाहों की लड़ाई और क़त्ल आम से मनुष्यों की वृद्धि नहीं होने पाती थी अक्सर साल में एकही फ़सल बोते थे अब अव्वल आबादी बहुत बढ़ी दूसरे लगान सख़्त हुआ तो कई २ फ़सलें बोने लगे खाद मवेशियों की कमी से पूरी मिलती नहीं इसलिये तबाही का रोग बढ़ने लगा हम को चाहिये कि खाद के साथ नये आलात भी इस्तेमाल करें महकमे ज़िराअत कानपुर ने बहुत से नये प्रकार के हल तय्यार किये हैं जो छोटे से बड़े तक २॥) रु. से ८) रु.
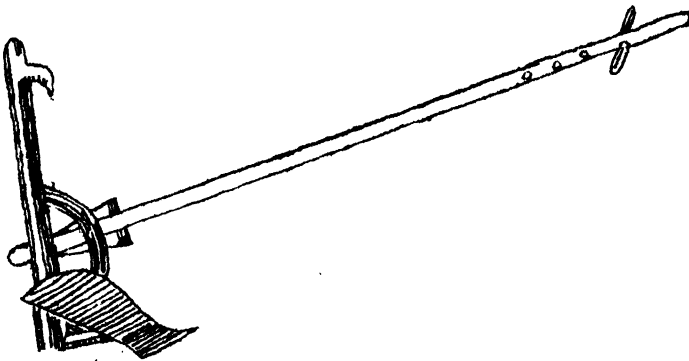
तक में मिल सक्के हैं इन सब में से औसत दर्जे के क़ैसर हल का (जो ५) रु० को मिलता है और हल का औसत दर्जे के बैल उसको खींच सक्के हैं) हाल लिखा जाता है यह हल मज़बूत है गांव के लोहार मरम्मत बखूबी कर सक्के हैं सख़्त घासों व मकाई की खूंटी (जड़ें) उखेड़ डालता है और ५ इंच चौड़ा कूंड करके मिट्टी पलट देता है जिससे ऊपर की बिछी हुई पांस और कमाई हुई मिट्टी और दूब उखड़ कर नीचे दब कर सड़ जाती है जिससे वृक्षों की जड़ों को ताक़त पहुंचती और नीचे की सख़्त मिट्टी नर्म्म हो जाती है देसी हल की चार जोताइयों की बराबर इसकी एक जोताई है अर्थात् चौथाई ख़र्च में इतना फ़ायदा है डेढ़ बीघा पक्के ज़मीन एक दिन में जुत जाती है अगर एक हलवाहा इस हल को लेकर दो गोई बैलों से अदल बदल कर काम करे तो दो हल के बराबर ज़मीन काश्त होगी इस तरह एक आदमी की तनख़्वाह ५०) रु० सालाना की बचत होगी और उसकी आमदनी (एक हल से दुगनी जोत कर) दुगनी हो जायगी इस तरह बेकार आदमी जो बचेंगे वह दूसरा उद्यम करेंगे या कम आबाद तराई के ज़िलों में जाकर उफ़्तादा और बंजर आराज़ी को मज़रूआ करके अपना और ज़िमींदार व गवर्नमेंट का कसीर फ़ायदा करेंगे अगर ज़िमींदार है तो उसका काम कम आदमियों में होकर ख़र्च की बचत होगी.

चूंकि पहले ही मवेशी की ज़्यादा तादाद की ज़रूरत बतला दी गई है इसलिये कुटिया काटने की कल जिससे १ आदमी दिन भर में ४८ मन पुआल काट सक्के हैं हालांकि गड़से से सिर्फ़ बमुशकिल १५ मन कट सक्ती है इसकी क़ीमत ३८) रु० है, दाना दलने की कल से भी एक औरत आसानी से ४ मन पक्के एक घंटे
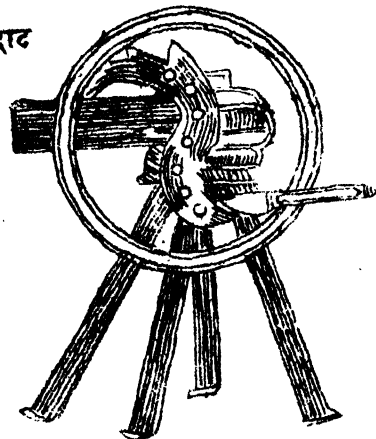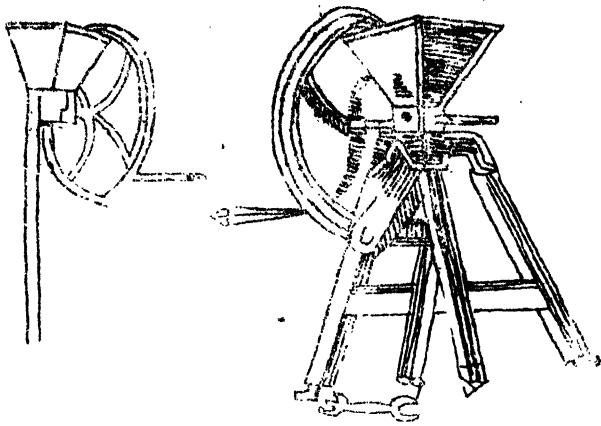
में काट लेती है इसकी क़ीमत (९) से लेकर (३३) रु० तक है अगर देखना हो तो कानपुर जाकर चलाकर इतमीनान करके देख के ले सक्ते हैं और यहां इस काम की पुस्तकें भी मुफ़्त मिलती हैं.

वृक्ष

सच तो यह है अब किस वर्ग सिनों में आप लोग नफ़ा अधिक कमाते हैं अगर ऊंचे नीचे खराब नाकारा और कल्लर की ज़मीन जिसमें किसानत न हो सके या कम फ़ायदा होता हो या हो सकता हो ऐसी ज़मीनों में दरख़्त जामुन गूलर वग़ैरा लगादो बबूल बोदादो तो थोड़े दिनों में यह तय्यार हो जावेंगे जिससे दरख़्तों के फल खाने में आसके हैं और सैकड़ों रुपयों की रक़म तय्यार हो सक्ती है बबूल से लकड़ी जलाने को आराम होगी दरख़्तों की कमी से तूफ़ान कम होते हैं जिससे पानी कम बरसता है और सूखा पड़ा करती है प्राचीन समय में जब जंगल अधिक था तब पानी न बरसने की ऐसी शिकायत न थी इसके सिवाय लकड़ी से और भी फ़ायदे हैं जिनको सब लोग जानते हैं.

गांव के कुल जानवर हमेशा दिन भर बाहर रहते हैं ऐसी हालत में गर्मी के समय में वह धूप की गर्मी से बचेंगे इसके सिवाय जिस ज़मीन में वृक्ष लगाये जाते हैं सरकार उसपर मालगुज़ारी नहीं लेती

दरख़्तों के लगाने से जो नफ़ा होगा उसका कुछ हाल लिखा जाता है अगर तीन साला वृक्ष १०० लगाये जावें तो एक मनुष्य उनको ३ अथवा ४ साल में तय्यार कर लेगा जिसकी तनख़्वाह ज़्यादा से ज़्यादा ३००) पड़ेगी अगर फ़ी दरख़्त से सिर्फ़ ।) की फ़सल पैदा हो तो १७७) रु० सालाना आमदनी होगी और थोड़े वर्षों में लकड़ी १०००) से कम की न होगी नीचे की ज़मीन जो पहले ख़राब थी पत्तियों के सड़ने और जड़ों के फैसले से नर्म होकर उम्दा होजावेगी.

महाजन

गौर कीजिये कि ऐसे समय (जबकि जिमींदारों को सब तरह से इत्मीनान हो) जो चाहे लगावे और कोई छीनने वाला न हो रोज़ मर्रा के कुज़ाफ़े से काश्तकार बचगये हो रेल की वजह से पैदावार अच्छे दामों निकती हो नव्वाबों की हरसाला क़ुर्क़ियात और चकलेदारों के ज़ुल्म अमले की रिश्वत दूर होकर पुख़्ता बन्दोबस्त हो चुका हो फिर अब कौन वजह है कि तबाही छा रही है.

प्रिय जिमींदारो व भोले भाले काश्तकारो ! तुम्हारा पड़ोसी महाजन जिस तरह जोंक ख़ून पीती है वह (महाजन) तुम्हारा खा रहा है उसके तरीक़े (रास्ते) यह हैं.

१— अक्सर कई जगह छोटे २ हिस्सा होने से अकेले वसूल करने का इख़्तियार आपुस में फूट से नहीं होता न यह हो सक्ता है कि आपुस में एक दूसरे से चीज़े बदल ले ताकि इन्तिज़ाम होसके और कर्ज़ (उधार) लेने की ज़रूरत न पड़े

२— बाज़े व्यर्थ ख़र्च भी नहीं करते तो भी इतना इन्तिज़ाम नहीं कि कुछ बचत में रहे जिससे कुसमय या काम काज में उधार न लेना पड़े.

३— अगर कुछ लेने की ज़रूरत भी हो तो भी अव्वल से कम ब्याज पर लेना चाहिये और जल्द अदा कर देना चाहिये मगर बहुधा लोग अपनी अज्ञानता से पहले तो कुछ फ़िक्र ही नहीं करते जब ज़रूरत पड़ती है तब अधिक ब्याज देकर ख़ूब ख़र्च करते हैं और फिर ऐसा (अधर्म) सोचते हैं कि कुछ देना न पड़े मियाद अदाई तक तो तकाज़ा रहा अब तो ३ वर्ष के उपरांत नालिश की नौबत आई

अगर इक़बाल कर लिया तो अगर (१००) रु० मूलधन है तो ब्याज और खर्चा अदालत मिलाकर (२००) रु० से अधिक देना पड़े अगर इनकार किया तो मुद्दई का और खर्चा बढ़ा और अपना भी रुपया गंवाया और वकील व अमला की खुशामद करते फिरे.

४—बहुधा लोग शौक़ से क़र्ज़ा लेते हैं वह भी बुरा है अव्वल तो ब्याज मुफ़्त में देना पड़ता है दूसरे मुन्तज़िम (बन्दोबस्ती) न रहा तो और भी अपराध है. वह दोस्त महाजन जो यह कहता था कि हम आप की बदौलत रोटी खाते हैं क़र्ज़ा क्या है परवरिश है रुपया रख लिया है तनख्वाह देते हैं या आसामियों से दिला देते हैं अब अदाई न होने से (वही परवरिश याफ़्ता महाजन) कहते हैं भाई हमारा सब रुपया दाम दाम अदा कीजिये नहीं तो हम आप की ज़िमींदारी पर दखल लेंगे नीलाम करावेंगे जो बाक़ी रुपया रहेगा उस पर क़ैद करा देंगे वह बिचारा (ज़िमींदार) घर का ज़ेवर ला कर देता है तो कहते हैं चांदी हम न लेंगे यह तो सूब्बर है सोना जो तुम लाये हो वह तो खैर आधे दामों में ले लेंगे परन्तु इसमें तो केवल ब्याज की अदाई होगी मूल धन तो बाक़ी ही रहेगा उसकी अदाई की तदबीर कीजिये हम अब बाक़ी रखना नहीं चाहते क्योंकि अब आप के इन्तज़ाम में गड़बड़ है उस बिचारे ने जब देखा कि कुछ गहना (ज़ेवर) देकर भी अदाई नहीं है तब आसामियों के पास गया कि भाई कुछ पेशगी देकर तुमही मदद करो उन्हों ने जोकि आपही ब्याज दे देकर तबाह थे उत्तर दिया कि यहां तो फ़ाके हो रहे हैं बधिया बैल हाज़िर हैं गर्ज़ कि बाक़ीदार आसामियों के बैल बधिया बिकवा लिये-जानवरों की कमी से खेतों का तरद्दुद घटा उस कमी को इज़ाफ़े से पूरा किया रहा सहा गांव उजाड़ होगया अन्त को कोई न कोई हिस्सा ग़ैर के हाथ बेचा वह मनुष्य ऐसी फ़िक्र में पड़ा कि किसी तरह कुल मौज़ा मुझ

को या मेरे कुटुम्ब या मेरे मित्रों को मिल जावे उसके हिस्से दारों में लड़ाई कराने लगा इस तरह सब हिस्से दारों को बर्बाद करके आप गांव का मालिक होगया और पड़ोसी के गांवों पर फ़िक्र लगाई.

अब आसामियों के क़र्ज़े का हाल देखिये-महाजन लोग कहते हैं कि हम साल सवाये अर्थात् ।≈) रुपये की मिती लेते हैं अगर हिसाब किया जावे तो आसामी को असाढ़ से कुंवार तक कर्ज़े लेने की ज़रूरत नहीं पड़ती कातिक से क़र्ज़े लेना आरंभ करते हैं और बहुधा क़र्ज़े में नाज मिलता है जिससे आसामी को महंगे भाव से दिया जाता है और वसूल के समय नाज मंहगे भाव से लिया जाता है जिसमें ७) रु॰ सैकड़ा आसामी को घाटा होता है और फिर ब्याज २५) रु॰ सैकड़ा कुल ३२) रु॰ सैकड़ा ६ महीने में अर्थात् ५॥) रु॰ सैकड़ा माहवारी ब्याज देना पड़ता है कभी २ पन्सेरी रुपया दाना ऊपर के नाम से भी देना पड़ता है.

वह जिमींदार बड़ा समझदार है जो आप और अपनी रिआया को क़र्ज़े की बीमारी से बचाये-गवर्नमेंट को देखो कि उसने तमाम संसार को क़र्ज़े से बचने और जल्द अदा होने के लिये जिराअती बैंक क़ायम करने का इरादा किया अगर जिमींदार ही अपनी आसामियों को कम ब्याज पर रुपया दें तो उनको अदालतों के झगड़े न करना पड़ें आसामी सख़्ती से बचें.

लगान

बहुधा लालची ज़िमींदार इज़ाफ़े में हद नहीं रखते उसमें पहले आसामी फिर आप तबाह होजाते हैं-अगर हर अच्छे बुरे मौसम की पैदावार का ख़्याल करके लगान मुक़र्रर कियाजावे तो रिआया आबाद और खुशहाल रहे लगान वक़्त पर अदा होतारहे मालगुज़ारी कम बढ़े और दोनों तबाही से बचें.

टेम्प्रेन्स सोसाइटी

वाज़े हो कि अर्से दराज़ से बमुकाम लश्कर गवालियार तमाम हिन्दुस्तान की कायस्थ टेम्प्रेन्स सोसाइटियों का सदर दफ़्तर मौजूद है यहां से सब जगह शराब और दीगर नशे की चीज़ों की मुमानिअत जारी होती है प्लेज होल्डरों को सर्टीफ़िकेट भी यहीं से दिये जाते हैं ग़र्ज़े कि क़ौमी परहेज़गारी के मुतअल्लिक़ तमाम काम इस दफ़्तर से होते हैं इस दफ़्तर ने इस वक़्त तक बहुत नुमायां काम किये हैं हज़ारों नापरहेज़गारों को परहेज़गार बनाया है और तक़रीबात शादी विवाह और त्यौहार होली वग़ैरा से शराब की रिवाज को बहुत कुछ उठा दिया और कम कर दिया है दस पन्द्रह बरस उधर शादियों में और होली के मौके पर शराबख़्वारी की जो हालत थी वह अब हरगिज़ नहीं है और इससे क़ौम और मुल्क को बेशुमार फ़ायदे पहुंचे हैं लिहाज़ा एलान किया जाता है कि जिन साहबों को नशे से परहेज़गार होना मंज़ूर हो वह दफ़्तर हाज़ा से ख़तकिताबत करें उनकी तहरीर का जवाब दिया जायगा और प्लेज भेज कर उनको और उनके अहबाब वग़ैरा को परहेज़गार बनाने की कोशिश की जायगी - इस दफ़्तर में मेम्बर होने के लिये कोई फ़ीस नहीं देना पड़ती है हां क़ौम के लोगों से बख़ुशी ख़ातिर दफ़्तर के मसारिफ़ के वास्ते चंदा लिया जाता है सो यह अपनी मरज़ी पर मुनहसिर है ख़्वाह कोई दे या न दे जबरदस्ती नहीं है.

ख़त किताबत बनाम मुंशी कामताप्रसाद साहिब जनरल सेक्रटरी टेम्प्रेन्स होना चाहिये.

लालताप्रसाद अडीटर

कायस्थ हितकारी १५ अप्रैल सन् १९०३ ई०

निवेदन

प्रिय मित्र वर्गो ! सैकडों बरस से हमारे बुज़ुर्ग क़ानूनगो रहे और कुल ज़िमींदारों से मेल जोल रहा अगर्चि अब क़ानूनगोई नहीं है परन्तु राह व रस्म उसी तरह पर बरक़रार है इस कारण मैं उचित समझताहूं कि अपनी बुद्ध्यानुसार ज़िमींदार अथवा काश्तकारों के हितार्थ पृथ्वी कमाने अर्थात् उसके सम्हालने और उससे फ़ायदा उठाने के उपाय वर्णन करूं, जो उन लोगों को सुखदायी हो यह किताब जिमींदार शिक्षा को लिखा- अब उम्मेद करता हूं कि जो लोग इसे पढेंगे अथवा अपने बालकों को पढ़ाकर इसके अनुसार बर्त्ताव करें अथवा करावेंगे वह हमेशा अपनी धरती से फ़ायदा उठाकर कभी टोटे में न पडेंगे-और मेरी ढिठाई पर क्षमाकर जहां कहीं भूल चूक हो उस को माफ़ करें.

युधिष्ठिर बहादुर वलद भवानीसहाय
वलद देवीदीन ज़िमींदार जाजमऊ